Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, Volume 3 | Issue 2 | (April – June 2026)

संहिता ज्योतिष में रत्न विज्ञान

नितेश बौड़ाई
शोध छात्र ज्योतिष विभाग, महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, कटनी

सारांश

प्राचीन संहिता ग्रंथों में रत्नों का वर्णन केवल अलंकारिक वस्तु के रूप में नहीं, बल्कि ज्योतिष, आयुर्वेद, धर्म, राजनीति तथा सामाजिक जीवन के महत्त्वपूर्ण अंग के रूप में प्राप्त होता है। वैदिक साहित्य, बृहत्संहिता, गर्गसंहिता, अग्निपुराण, अर्थशास्त्र तथा रसरत्नसमुच्चय आदि ग्रंथों में रत्नों की उत्पत्ति, स्वरूप, गुण, दोष, परीक्षा तथा उपयोग का विस्तृत विवेचन मिलता है। इन ग्रंथों से स्पष्ट होता है कि प्राचीन भारतीय आचार्यों को रत्नों के भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों पक्षों का गहन ज्ञान था। संहिता ग्रंथों में मुख्यतः नवरत्नों — माणिक्य, मोती, मूंगा, पन्ना, पुष्पराज, हीरा, नीलम, गोमेद तथा वैदूर्य — का वर्णन प्राप्त होता है। प्रत्येक रत्न को किसी न किसी ग्रह से संबंधित माना गया है तथा उनके शुभाशुभ प्रभावों का उल्लेख किया गया है। बृहत्संहिता में रत्नों की शुद्धता, चमक, रंग, कठोरता एवं दोषों की परीक्षा का अत्यंत वैज्ञानिक वर्णन मिलता है। आयुर्वेदिक ग्रंथों में रत्न भस्म के निर्माण तथा उनके चिकित्सीय प्रयोगों का उल्लेख मिलता है। इनका उपयोग मानसिक शांति, रोग निवारण तथा शारीरिक शक्ति-वृद्धि हेतु किया जाता था। इससे ज्ञात होता है कि भारतीय चिकित्सा पद्धति में रत्न विज्ञान का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

बीज शब्दः संहिता ज्योतिष, रत्न विज्ञान, नवरत्न, बृहत्संहिता, रत्न परीक्षा, रत्न चिकित्सा

प्रस्तावनाः

रत्न शब्द संस्कृत भाषा का शब्द है, जो "रम" धातु में "न" का प्रत्यय जोड़ने से बना है। अमरकोश में रत्न और मणि को पर्याय माना गया है। रसतरंगिणी में रत्न की परिभाषा करते हुए कहा गया है:-

रमणीयतरं यस्माद् रमन्तेऽस्मिन्नयाविता।

तस्माद् रत्नमिदं ख्यातं शब्दशास्त्रविशारदैः ।।1।

अर्थात् जो रमणीयतर है और जिसे देखने वालों का मन रम जाता है, उसे विद्वानों ने रत्न कहा है। सरल शब्दों में इसकी परिभाषा करते हुए कहा जा सकता है कि रत्न वे अजैविक और जैविक खनिज हैं, जो अपेक्षाकृत कठोर, चमकदार, सुंदर एवं दुर्लभ हैं। भारतीय शास्त्रों में रत्न की संख्या 84 मानी गई है। इनमें से 9 रत्न प्रमुख हैं, जिन्हें नवरत्न कहा जाता है और ये नवग्रहों से संबंधित हैं। शेष अन्य उपरत्न की श्रेणी में आते हैं। भारतीय संदर्भ में देखें तो वेद, पुराण, रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थों में रत्नों का उल्लेख हुआ है। ऋग्वेद के प्रथम मंत्र में ही रत्न शब्द आया है:

ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्। 2।।

रत्नों के प्रचलन की प्राचीनता के संबंध में वराहमिहिर द्वारा रचित बृहत्संहिता के अध्याय 79 से 82 में रत्नों के उपयोग के संबंध में सुंदर वर्णन मिलता है। अध्याय 79 में रत्नपरीक्षा, रत्नों की उत्पत्ति, उनके नाम, उनके विभिन्न नाम, विभिन्न रत्नों के लक्षण आदि की चर्चा इस ग्रंथ में की गई है।

रत्नेन शुभेन शुभं भवति नृपाणामनिष्टमशुभेन । यस्मादतः परीक्ष्यं दैवं रत्नाश्रितं तज्ज्ञैः ।। 3 ।।

आचार्य वराहमिहिर ने रत्नों की उत्पत्ति के विषय में पूर्वप्रचलित तीन मतों का उल्लेख किया है।

1. कुछ लोग रत्नों की उत्पत्ति दैत्य राज बाली से मानते हैं।
2. कुछ विद्वान महर्षि दधीचि की अस्थि से रत्नों की उत्पत्ति मानते हैं।
3. कोई पृथ्वी की स्वभावगत विशिष्टता के कारण रत्नों की उत्पत्ति स्वीकारते हैं। 4।।

बृहत्संहिता के अनुसार रत्नों का वर्गीकरण एवं नाम

आचार्य वराहमिहिर के अनुसार संसार में केवल चार माध्यमों से रत्नों की प्राप्ति होती है।

1. दिव्य रत्न 2. प्राणिज रत्न 3. खनिज रत्न 4. वनस्पतिक रत्न

दिव्य रत्नः दिव्य रत्न देवताओं के द्वारा की गई तपस्या के बल से किसी सिद्धि से अलौकिक शक्ति स्वरूप में प्राप्त होते हैं। महाभारत व पौराणिक कथाओं में स्यमन्तक मणि, कौस्तुभ मणि आदि अनेक दिव्य मणि के प्रसंग मिलते हैं।

प्राणिज रत्नः प्राणिज रत्नों के अंतर्गत उन रत्नों की गणना की जाती है, जो किसी प्राणी अथवा जीव-जन्तु के शरीर से उत्पन्न होते हैं। इस कोटि में मूंगा, मोती, गजमुक्ता, सर्पमणि, मत्स्य मणि आदि रत्न प्राणिज रत्न कहलाते हैं।

4. खनिज रत्नः भूगर्भ, खान-खदानों से प्राप्त अति मोहक, आकर्षक व चमकीली रश्मियों वाले पत्थर इसी श्रेणी में आते हैं। माणिक्य, पुखराज, पन्ना, नीलम आदि इसके प्रमुख उदाहरण हैं।
5. वानस्पतिक रत्नः इस श्रेणी के अंतर्गत वे रत्न आते हैं, जो वनस्पति विशेष से उत्पन्न होते हैं। उदाहरण के लिए वंशलोचन, वंश मणि, वंश मुक्त, तृष्णा मणि। 5।।

आचार्य वराहमिहिर ने बृहत्संहिता में रत्न परीक्षा के संबंध में कुल चार अध्याय दिए हैं, जिसमें 80वें अध्याय में हीरे की परीक्षा के 18 श्लोक दिए गए हैं। 81वें अध्याय में विविध प्रकार के मोतियों की परीक्षा तथा गुणों का वर्णन 36 श्लोकों में दिया है तथा श्लोक 31 से 36 तक मोतियों से बनने वाली 17 प्रकार की मालाओं का वर्णन दिया है। 6।।

माणिक्यं दिननायकस्य विमलं मुक्ताफलं शीतगो-महियस्य च विद्रुमं मरकतं सौम्यस्य गारुत्यकम्।

देवेज्यस्य च पुष्परागमसुराचार्यस्य वज्रं शनेनीलं निर्मलमन्ययोश्च गदिते गोमेदवैडूर्यके ॥ (जा०पा० 2/21)।।7।।

नारद संहिता के अध्याय 12 के गोचर अध्याय में ग्रहों के रत्नों और नवग्रह के अशुभ फल-शांति के उपाय की चर्चा है।

ग्रहेषु विषमस्थेषु शान्तिं यत्नात्समाचरेत्। हानिवृद्धिर्ग्रहाधीना तस्मात्पूज्यतमा ग्रहाः॥ (नारद संहिता 12/12)

ग्रह हानि-लाभ के सूचक होते हैं, अतः यदि कोई ग्रह अशुभ स्थान में हो, तो उसकी शान्ति यत्नपूर्वक मन्त्र, जप, होम, औषधि-धारण तथा रत्न-धारण आदि के द्वारा करनी चाहिए॥ 8।।

रत्न केवल आभूषणों की शोभा नहीं बढ़ाते, अपितु इनमें रोग निवारण की अद्भुत शक्ति भी है। अनेक आयुर्वेदिक संहिता ग्रंथों और यूनानी चिकित्सा पद्धति में विभिन्न शारीरिक और मानसिक रोगों की चिकित्सा में रत्नों की भस्म या पिष्टी का प्रयोग किया जाता है। होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति में भी रत्नों के मूल अर्क (मदर टिंक्चर) का प्रयोग किया जाता है।

अष्टांग संग्रह जो आचार्य वाग्भट्ट का प्रमुख ग्रंथ है, उसमें अध्याय 8 में रत्नों के माध्यम से विष के परिहार की चर्चा की गई है। 12वें अध्याय में रत्नों को आयुष, ओज, हर्ष, आयु की वृद्धि करने वाला और मंगलकारी बताया गया है।

मणिरत्नं सरं शीतं कषायं स्वादुलेखनम्। चक्षुष्यं धारणात्तत्तु पापालक्ष्मीविषापहम्। धन्यमायुष्यमोजस्यं हर्षोत्साहकरं शिवम्।।9

शारंगधर संहिता के अध्याय 11 में रत्नों के शोधन और मारण का प्रयोग कर भस्म, क्वाथ, पिष्टी निर्माण की विधि बताई गई है, जिससे अनेक प्रकार के रोगों का शमन किया जाता है।

कुमार्यास्तण्डुलीयेन स्तन्येन च निषेचयेत्। प्रत्येकं सप्तवेलं च तप्ततप्तानि कृत्स्नशः॥ मौक्तिकानि प्रवालानि तथा रत्नान्यशेषतः। क्षणाद्विविधवर्णानि नियन्ते नात्र संशयः॥

उक्तमाक्षिकवन्मुक्ताः प्रवालानि च मारयेत्। वज्रवत्सर्वरत्नानि शोधयेन्मारयेत्तथा।। 10।।

चरक संहिता में रत्नों के प्रयोग का विस्तार से वर्णन नहीं मिलता है, लेकिन कुछ संदर्भों में रत्नों के औषधीय गुणों का उल्लेख किया गया है। चरक संहिता में रत्नों का उपयोग मुख्य रूप से धातुओं के औषधीय प्रयोग के संदर्भ में है।

सभी पुराणों एवं उपपुराणों में रत्नों के विषय की चर्चा प्राप्त होती है। श्रीमद् देवी भागवत में देवी के विमान को रत्न-जटित कहा गया है, अग्नि पुराण के अध्याय 246 में रत्न परीक्षा के विषय का वर्णन है, गरुड़ पुराण के अध्याय 73 तक रत्नों संबंधी विवरण विस्तार से मिलता है। ब्रह्म पुराण में शिव जी के विवाह में रत्न-जटित वेदी बनी हुई थी, उसमें हीरा, माणिक्य और अन्य बेशकीमती मणियों का वर्णन मिलता है।

तत्र वेदी रत्नमयी शोभिता स्वर्णभूषिता। वज्रमाणिक्यवैदूर्यतन्मयस्तम्भशोभिता।। (ब्रह्म पुराण 72/5)।।11

रत्न प्रदीप, रत्न परीक्षा, रत्न ज्योतिष, मुहूर्त चिंतामणि आदि ग्रन्थों में रत्न धारण से ग्रह-शांति व रोग-निवृत्ति के उपाय की चर्चा की गई है। आधुनिक ज्योतिष में रत्न धारण के अनेक सिद्धांत प्रचलित हैं। इनमें से मुख्य आठ सिद्धांत प्रचलित हैं:

लग्नेश एवं त्रिकोणेश के रत्न धारण।

विद्यमान महादशा-अंतर्दशा के स्वामी के रत्न धारण।

अशुभ गोचर स्थित ग्रह का रत्न धारण।

जन्म राशि के अनुसार रत्न धारण।

कामना के अनुसार ग्रहों का रत्न धारण।

मूलांक के अनुसार रत्न धारण।

हस्तरेखा के अनुसार रत्न धारण।

सायन सूर्य राशि के अनुसार रत्न धारण। (12)

ज्योतिष शास्त्र में लग्नेश, भाग्येश, आयुकारक, मारक, पालक, विद्या, संतान, धन, स्वास्थ्य, लाभ-हानि और सुख-दुख

देने वाले ग्रहों की भूमिका निश्चित होती है। इन्हीं शुभ-अशुभ ग्रहों के आधार पर रत्नों का निर्धारण होता है। जो रत्न किसी व्यक्ति के लिए अनुकूल हो, वह दूसरे के लिए प्रतिकूल भी हो सकता है। रत्न तीन प्रकार से कार्य करते हैं:

1. शुभ कर्मों के भोग में आने वाली बाधाओं को हटाना।
2. अशुभ ग्रहों के प्रभाव से रक्षा करना।
3. सात्विक परंतु दुर्बल ग्रहों के अतिरिक्त बल की वृद्धि करना। 13।।

अतः यह कहने और मानने में संकोच की कोई जगह नहीं बचती कि अपनी किस्मत जगाने वाले रत्नों का निश्चय करने के लिए सदा जन्मपत्री और हाथ की रेखाओं के आधार पर ही निर्णय करना ठीक है। जन्मपत्री में ही सौरमंडल के ग्रहों की स्थिति स्पष्ट रहती है, जिससे रत्नों का निश्चय करने का आधार लग्न और ग्रह हैं।

आचार्य वराहमिहिर ने बृहत्संहिता में बड़े प्रामाणिक तरीके से रत्नों की पहचान और परीक्षण की विस्तृत चर्चा की है। नारद संहिता व अन्य संहिता ग्रंथों में रत्नों के विषय में उतनी जानकारी उपलब्ध नहीं है, जितना विस्तार बृहत्संहिता में है। आयुर्वेद की संहिताओं में रत्नों के विभिन्न रोगों के निवारण की चर्चा है। आज के आधुनिक युग में रत्नों का मूल्य अधिक है, असली और नकली रत्नों की पहचान करना मुश्किल है। ऐसे में बृहत्संहिता के माध्यम से रत्नों का परीक्षण कर रत्न को धारण करना चाहिए। इससे आयु, आरोग्यता, विजय के साथ मन की कामना पूरी होने में सहायता मिलती है। सभी रत्नों में प्राकृतिक रत्न कहलाने वाले योग्य पदार्थ हैं और अनेक उपयोगों के माध्यम से जीवन को सार्थक बनाया जा सकता है। इससे यह प्रकट होता है कि अनुकूल रत्न, मणि, औषधि तय करने के लिए कुंडली, जन्म चंद्र राशि और हस्तरेखाओं का निर्णयक सिद्ध होना संभव है।

सकलफलानां मूलं प्रोक्तं त्रितयम् इन्दुसूर्यलग्नानाम्। सूक्ष्मात्सूक्ष्मं क्रमशोऽतिशेते तस्माद् विलग्नस्य।। (14)

इससे निश्चय हुआ कि लग्न कुण्डली के विचार के बाद ही अपने लिए अनुकूल रत्न तय करना चाहिए।

निष्कर्ष:

वैदिक साहित्य से लेकर बृहत्संहिता, गर्गसंहिता, अग्निपुराण, अर्थशास्त्र तथा रसरत्नसमुच्चय आदि ग्रंथों में रत्न विज्ञान का विस्तृत निरूपण मिलता है। विशेषतः बृहत्संहिता में रत्नों की परीक्षा, शुद्धता, रंग, चमक तथा उनके शुभाशुभ प्रभावों का अत्यंत सूक्ष्म एवं व्यवस्थित वर्णन किया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि प्राचीन भारतीय विद्वानों को रत्नों के भौतिक गुणों का पर्याप्त ज्ञान था। इसी प्रकार आयुर्वेदिक ग्रंथों में रत्नों के औषधीय प्रयोग तथा रत्न भस्म के निर्माण का उल्लेख प्राप्त होता है, जो उस समय की चिकित्सा प्रणाली की उन्नत अवस्था को प्रदर्शित करता है। भारतीय मनीषियों ने रत्नों के स्वरूप, गुण, दोष, प्रभाव तथा उपयोग का गहन अध्ययन किया, जिसका विस्तृत वर्णन विभिन्न संहिता ग्रंथों में प्राप्त होता है। इन ग्रंथों में रत्नों का विवेचन वैज्ञानिक दृष्टिकोण, दार्शनिक विचार तथा लोककल्याण की भावना के साथ किया गया है। अतः "संहिता ग्रंथों में रत्न विज्ञान" विषय का अध्ययन भारतीय वैज्ञानिक परम्परा, सांस्कृतिक विरासत तथा प्राचीन ज्ञान-विज्ञान को समझने की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं प्रासंगिक है।

संदर्भ सूची:

1. रत्न विज्ञान, बालमुकुंद शर्मा, पृष्ठ 15,

2. बृहत्संहिता, रंजन पब्लिकेशन (डॉ सुरेश चंद्र मिश्रा), अध्याय 15, पृष्ठ 251,

3. ऋग्वेद संहिता, चौखंबा भारती प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 27

4. आचार्य वराहमिहिर का ज्योतिष में योगदान, रंजन पब्लिकेशन (डॉ भोजराज द्विवेदी), अध्याय 15, पृष्ठ 251,

5. आचार्य वराहमिहिर का ज्योतिष में योगदान, रंजन पब्लिकेशन (डॉ भोजराज द्विवेदी), अध्याय 15, पृष्ठ 252,

6. रत्न परीक्षा (श्री अभय कात्यायन), चौखंबा संस्कृत प्रकाशन, परिशिष्ट 2, पृष्ठ 71,

7. ज्योतिष तत्त्व अंग: (गीता प्रेस गोरखपुर), ज्योतिष और रत्न, डॉ श्री मूल वर्धन, पृष्ठ संख्या 342,

8. नारद संहिता (अभय कात्यायन), चौखंबा संस्कृत प्रकाशन, अध्याय 12, पृष्ठ संख्या 128,

9. अष्टांग संग्रह, प्रोफेसर रवि दत्त त्रिपाठी, अध्याय 8, पृष्ठ संख्या 161,

10. शारंगधर संहिता, डॉ शैलजा श्रीवास्तव, अध्याय 11, पृष्ठ 272,

11. ज्योतिष सागर (पत्रिका), पृष्ठ संख्या 11,

12. रत्न परीक्षा (श्री अभय कात्यायन), रंजन पब्लिकेशन, परिशिष्ट 1, पृष्ठ 62,

13. आचार्य वराहमिहिर का ज्योतिष में योगदान, डॉ भोजराज द्विवेदी, रंजन पब्लिकेशन (अध्याय 15, पृष्ठ संख्या 253)

14. किस्मत के अनमोल रत्न (डॉ सुरेश चंद्र मिश्रा), रंजन पब्लिकेशन, अध्याय 3, पृष्ठ 39,